फासीवाद

फासीवाद उन बेमेल विचारों और मान्यताओं का समुच्चय है जिन्हें प्रथम विश्वयुद्ध (1914–1918) के बाद के दशकों में इटली के तत्कालीन नेता बेनितो मुसोलिनी ने संपूर्ण राष्ट्र को अनुशासन और एक सूत्र में बांधने के उद्देश्य से बढ़ावा दिया था। यह विचारधारा लोकतंत्र, समाजवाद और साम्यवाद के विरूद्ध प्रजातिवाद, सत्तावाद और सर्वाधिकारवाद का वर्चस्व स्थापित करने के ध्येय से प्रस्तुत की गई थी। फासीवाद के समानान्तर उन्हीं दिनों जर्मनी के नेता एडोल्फ हिटलर ने जर्मनी में नाजीवाद के नाम से सम्राज्यवादी, प्रजातिवादी और लोकतंत्र विरोधी विचार प्रस्तुत किया था। इनके अलावे तत्कालीन जापान, फ्रेंको कालीन स्पेन, सालाजार कालीन पुर्तगाल और पैरों कालीन अर्जेटिना की सर्वाधिकारवादी और अधिनायकतंत्रीय व्यवस्थाओं को भी फासिस्ट विचारधारा की अभिव्यक्ति माना जाता है।

अंग्रेजी के फासिज्म शब्द की उत्पति **लैटिन के 'फासियो'** शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है "डंडों **का गट्ठर जो कुल्हाड़ी के हत्थे के इर्द गिर्द लाल डोरे से बंधें होते हैं**।" इसे प्राचीन रोमन कांसुलों के सहायक राज्यशक्ति के प्रतीक के रूप में उठाकर चलते थे। आधुनिक फासिस्टों ने इसे अनुशासन, एकता और शक्ति के प्रतीक के तौर पर अपना लिया और प्रचारित किया।

फासिस्ट विचारधारा के तत्वाधान में नेतृत्व के विचित्र रूप का अविर्भाव हुआ, जिसमें नेताओं ने सब नियमों , कानूनों और मर्यादाओं को तिलांजली देकर अपने विलक्षण व्यक्तित्व के बल पर तथा प्रजातिवाद, प्रबल राष्ट्रवाद, राष्ट्रिय एकता और राष्ट्रिय गौरव के नाम पर लोंगों से बड़े से बड़ा त्याग करने की मांग की और उनका अंध समर्थन प्राप्त कर उन्हें युद्ध की विभीषिका में जाने के लिए प्रेरित किया।

वास्तव में फासीवाद कोई विचारधारा नहीं है। यह एक नीति है, एक क्रिया है, कार्य करने का एक तरिका है। यह सिद्धांत कम है व्यवहार अधिक है। यह सत्ता प्राप्त करने तथा उसे बनाए रखने की योजना है। इसके दो मूलमंत्र हैं – निरंकुशवाद तथा विस्तारवाद। देश की सीमाओं के भीतर निरंकुशवाद अर्थात तानाशाही और देश की सीमाओं के बाहर विस्तारवाद। देश की सीमाओं में फासीवाद एक दल एक नेता, अनुशासन, अधिनायकवाद, कर्तव्यों पर अधिक बल, कानूनों का पालन, विरोध व प्रतिपक्ष की हानि आदी में विश्वास करता है। बाहरी क्षेत्र में फासीवाद सैनिकवाद, युद्ध, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद आदि का समर्थन करता है। यह विश्व शान्ति को कायरों की भाषा मानता है और युद्ध को राज्य के लिए उतना ही स्वाभाविक मानता है जितना कि एक स्त्री के लिए मातृत्व होता है।

फासीवाद **कुछ मान्ताओं पर आधारित है,** जो निम्नलिखित हैं–

1. व्यक्ति विवकेशील नहीं होता है

2. राज्य विवके युक्त होता है

3. सत्ता स्वाभाविक होती है

4. नस्लवाद व्यक्ति का आधार है, आर्य प्रजाति सर्वश्रेष्ठ है

5. राज्य और सरकार की शक्ति पर कुछ लोंगों का ही आधिपत्य होता है।

संक्षेप में **फासीवाद की मुख्य विशेषताएं** निम्नलिखित हैं–

1. यह समाज, राष्ट्र और राज्य में भेद नहीं करता, इसके विचार में राष्ट्र में राज्य और समाज दोनों समाहित हो जाते हैं। सब कुछ राज्य में निहित है, कुछ भी राज्य के बाहर और विरूद्ध नहीं है।

2. फसीवादियों के लिए राज्य सर्वशक्तिमान है, इसके पास व्यक्ति के विरूद्ध सभी अधिकार हैं और कर्तव्य कुछ नहीं।

3. राज्य का साकार रूप सरकार में है, सरकार का फासीवादी दल में है और दल का साकार रूप उसके नेता में है। इस दृष्टि से दल का नेता ही राज्य है और वह कभी गलत नहीं हो सकता।

4. फासीवाद और नाजीवाद अपने स्वरूप में प्रजातिवाद का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। फासीवाद की इतालवी जाति और नाजीवाद की आर्य जाति में सम्पूर्ण आस्था थी। अपने विचारों की आड़ में इन्होंने गैर जातियों पर अत्याचार किए और उनका दमन किया।

5. फासीवाद बल तथा सैन्य शक्ति में विश्वास करता है। वह किसी प्रकार के अंतरराष्ट्रिवाद को स्वीकार नहीं करता। यह युद्ध, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का समर्थन करता है।

6. फासीवाद लोकतंत्र तथा उसके मूल्यों में विश्वास नहीं रखता।

7. फासीवाद राज्य के अधीन अर्थव्यवस्था का समर्थन करता है, वह समाजवाद और पूंजीवाद की मान्यताओं को राज्य के अधीन समझता है।

8. फासीवाद का झुकाव दक्षिणपंथ की ओर है।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि फासीवाद एक मानवता विरोधी, शान्ति विरोधी और प्रगति विरोधी दर्शन है। वर्तमान समय में इसका अस्तित्व नहीं है लेकिन विश्व के कुछ हिस्सों में या कुछ गुटों के तौर तरिकां में फासिस्ट विचारधारा आज भी जीवित है। आज के

लोकतांत्रिक युग में फासिस्ट प्रवृतियों को विकृति के रूप में देखा जाता है। इसे मानव जाति के लिए एक अभिशाप के तौर पर देखा जाता है।